DHYEYA IAS
most trusted since 2003

DAILY pre PARE
Current affairs summary for prelims

17 November, 2023

केंद्रीय दत्तक ग्रहण संसाधन प्राधिकरण

संदर्भ: इस महीने की शुरुआत में सुप्रीम कोर्ट ने भारत के गोद लेने के नियमन निकाय केंद्रीय दत्तक ग्रहण संसाधन प्राधिकरण को परेशान करने वाली "बड़ी देरी (great delay)" पर सवाल उठाया था।

- **भारत में दत्तक ग्रहण परिदृश्य का अवलोकन**:
  - भारत में लगभग 30,000 भावी माता-पिता एक बच्चे को गोद लेने के लिए औसतन तीन साल तक इंतजार करते हैं।
  - केवल लगभग 10% अनाथ बच्चों (अनुमानतः 30,000 से 30 मिलियन के बीच) को सालाना गोद लिया जाता है।
  - सुप्रीम कोर्ट ने CARA की भूमिका को संबोधित करते हुए भारत की गोद लेने की प्रणालियों में "बड़ी देरी" पर चिंता व्यक्त की।

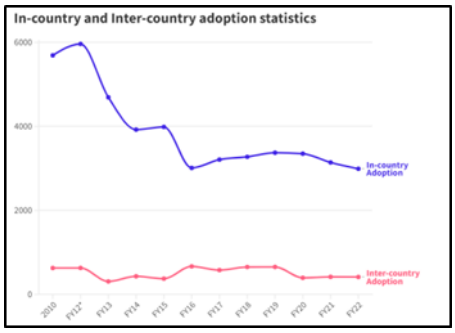

- **CARA का गठन और उद्देश्य:**
  - CARA (केंद्रीय दत्तक ग्रहण संसाधन प्राधिकरण) की स्थापना 1990 में महिला एवं बाल विकास मंत्रालय के तहत की गई थी।
  - इसकी भूमिका भारत में अनाथ, आत्मसमर्पित और परित्यक्त बच्चों और विदेश में अनिवासी भारतीयों के लिए बच्चे को गोद लेने की प्रक्रियाओं की निगरानी करना है।
  - CARA 1993 में अंतर-देशीय गोद लेने को विनियमित करने के लिए बच्चों के संरक्षण और सहयोग पर हेग कन्वेंशन का एक हस्ताक्षरकर्ता बन गया।
- **भारत में गोद लेने को नियंत्रित करने वाले कानून:**
  - भारत में दत्तक ग्रहण हिंदू दत्तक ग्रहण और भरण-पोषण अधिनियम, 1956 और किशोर न्याय (बच्चों की देखभाल और संरक्षण) अधिनियम, 2015 द्वारा शासित होता है।
  - जब माता-पिता गोद लेने के लिए किशोर न्याय अधिनियम का मार्ग चुनते हैं तो CARA शामिल होता है।
- **CARA की शक्तियों का विस्तार:**
  - 2015 में किशोर न्याय (बच्चों की देखभाल और संरक्षण) अधिनियम के पारित होने के साथ CARA की शक्तियों का विस्तार हुआ।
  - संशोधनों में अपनाने की सुविधा और पारदर्शिता सुनिश्चित करने के लिए ई-गवर्नेंस प्रणाली (CARINGS) का कार्यान्वयन शामिल था।
  - इन संशोधनों का उद्देश्य गोद लेने की प्रक्रिया को सुव्यवस्थित करना और अंतर-देशीय गोद लेने में कदाचार को रोकना था।
- **गोद लेने की प्रक्रिया में CARA के कार्य:**
  - CARA गोद लेने से संबंधित विभिन्न निकायों जैसे SARA, SAA, AFAA, CWCs और DPUs की निगरानी और विनियमन करता है।
  - भावी माता-पिता; पंजीकरण, रेफरल और गोद लेने के बाद के फॉलो-अप जैसी प्रक्रियाओं के माध्यम से गोद लेने की प्रणाली के साथ बातचीत करते हैं।
- **CARA के सामने चुनौतियाँ:**
  - चुनौतियों में बुनियादी ढांचे की कमी, जागरूकता की कमी और एसएए और सीडब्ल्यूसी जैसे चैनलों की खराब कार्यप्रणाली शामिल है।
  - लाइसेंस प्राप्त गोद लेने वाली एजेंसियों के लिए कानूनी आदेश अक्सर पूरे नहीं किए जाते हैं, जिससे गोद लेने के लिए पात्र बच्चों की पहचान में बाधा आती है।
  - भ्रामक कानून, नौकरशाही लालफीताशाही और प्रक्रियात्मक चुनौतियाँ गोद लेने के आंकड़ों में गिरावट में योगदान करती हैं।
- **सिफ़ारिशें और आलोचनाएँ:**
  - सिफारिशों में अनाथ और परित्यक्त बच्चों की पहचान करने और उन्हें गोद लेने के लिए उपलब्ध कराने के लिए जिला-स्तरीय सर्वेक्षण शामिल हैं।
  - आलोचक "माता-पिता-केंद्रित" से "बाल-केंद्रित" गोद लेने की प्रणाली में बदलाव के लिए तर्क देते हैं, और अधिक सक्षम और लिंग-न्यायसंगत विशेष गोद लेने के कानून की आवश्यकता का सुझाव देते हैं।
- **CARA की भूमिका के लिए सुझाव:**
  - CARA को बाल-केंद्रित, वैकल्पिक, सक्षम और लिंग-न्यायपूर्ण विशेष दत्तक ग्रहण कानून द्वारा शासित करने की आवश्यकता है।
  - बच्चों की भलाई की रक्षा करने और एक ऐसी प्रक्रिया सुनिश्चित करने पर जोर दिया जाए जो उन्हें दंडित न करे बल्कि उनके अधिकारों की रक्षा करे।

पशु स्वास्थ्य के लिए विश्व संगठन

संदर्भ: भारत एशिया और प्रशांत क्षेत्र में क्षेत्रीय आयोग के लिए WOAH के 33वें सम्मेलन की मेजबानी कर रहा है। विश्व पशु स्वास्थ्य संगठन (OIE) की स्थापना 1924 में वैश्विक पशु रोगों से निपटने के लिए की गई थी।

- OIE में भारत सहित 182 सदस्य देश हैं।
- ओआईई का प्राथमिक उद्देश्य वैश्विक स्तर पर एपिज़ूटिक रोगों के प्रसार को नियंत्रित करना और रोकना है।
- OIE सक्रिय रूप से रोगाणुरोधी प्रतिरोध (AMR) को संबोधित करता है और इस संदर्भ में इसने वर्ष 2016 में रोगाणुरोधी प्रतिरोध पर OIE रणनीति लॉन्च की है।
- यह रणनीति; जागरूकता बढ़ाने, निगरानी और अनुसंधान के माध्यम से ज्ञान को मजबूत करने, सुशासन और क्षमता निर्माण का समर्थन करने सहित अंतरराष्ट्रीय मानकों को लागू करने पर केंद्रित है।
- OIE; सदस्य देशों के लिए बीमारियों और रोगजनकों की शुरूआत से सुरक्षा के लिए नियम स्थापित करने वाले मानक दस्तावेज़ विकसित करता है।
- OIE मानकों को विश्व व्यापार संगठन द्वारा अंतर्राष्ट्रीय स्वच्छता नियमों के रूप में मान्यता प्राप्त है।
- OIE का मुख्यालय पेरिस, फ्रांस में है, और यह संस्थागत और वित्तीय स्वायत्तता के साथ संयुक्त राष्ट्र प्रणाली से स्वतंत्र रूप से संचालित होता है।
- ओआईई को जानवरों में रोगाणुरोधी उपयोग (एएमयू) पर वैश्विक डेटाबेस के विकास और रखरखाव का नेतृत्व करने का दायित्व सौंपा गया है।

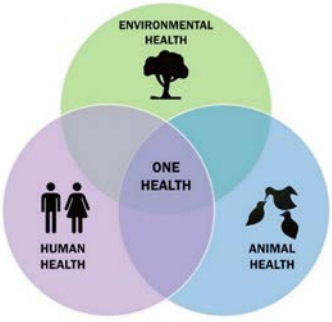

Face to Face Centres

DELHI MUKHERJEE NAGAR: 9205274741, 42 | LAXMI NAGAR : 9205212500, 9205962002 | RAJENDRA NAGAR: 9205274743 | UTTAR PRADESH PRAYAGRAJ: 0532-2260189, 8853467068 | LUCKNOW (ALIGANJ): 0522-4025825, 9506256789 | LUCKNOW (GOMTI NAGAR): 7234000501, 7234000502 | GREATER NOIDA: 9205336037, 38 | KANPUR: 7887003962, 7897003962 | GORAKHPUR : 7080847474, 9161947474 | ODISHA BHUBANESWAR: 9818244644/7656949029

dhyeyaias.com

- जानवरों में उपयोग के लिए रोगाणुरोधी एजेंटों पर पांचवीं ओआईई वार्षिक रिपोर्ट के अनुसार, एशिया-प्रशांत क्षेत्र अन्य क्षेत्रों की तुलना में रोगाणुरोधी (पशु बायोमास द्वारा) का सबसे अधिक उपभोक्ता है।
- ओआईई के वैश्विक मानक और पहल पशु स्वास्थ्य और बीमारी की रोकथाम में अंतरराष्ट्रीय प्रयासों में योगदान करते हैं।

एक स्वास्थ्य अवधारणा (One Health Concept)

- यह एक ऐसा दृष्टिकोण है जो मानव स्वास्थ्य, पशु स्वास्थ्य और पर्यावरण के अंतर्संबंध को चिन्हित करता है।
- यह अवधारणा विभिन्न संगठनों के आपसी सहयोग पर आधारित है, विशेष रूप से त्रिपक्षीय-प्लस गठबंधन जिसमें संयुक्त राष्ट्र के खाद्य और कृषि संगठन (एफएओ) और विश्व पशु स्वास्थ्य संगठन (ओआईई) आदि; जो शामिल हैं।
- वन हेल्थ अवधारणा का उद्देश्य मानव स्वास्थ्य, पशु स्वास्थ्य, पौधों, मिट्टी और पर्यावरण और पारिस्थितिकी तंत्र स्वास्थ्य सहित विभिन्न विषयों में अनुसंधान और ज्ञान-साझाकरण में सहयोग को बढ़ावा देना है।
- साथ ही इस अवधारणा का उद्देश्य स्वास्थ्य संबंधी मुद्दों को समग्र रूप से संबोधित करके सभी प्रजातियों के स्वास्थ्य में सुधार, सुरक्षा और बचाव करना भी है।

एक स्वास्थ्य अवधारणा के बढ़ते महत्व के कारण:

- **मानव विस्तार:** बढ़ती मानव आबादी नए क्षेत्रों में विस्तार कर रही है, जानवरों और उनके पर्यावरण के साथ संपर्क बढ़ा रही है, जिससे जानवरों और मनुष्यों के बीच बीमारियों के स्थानांतरण के अधिक अवसर पैदा हो रहे हैं।
- **ज़ूनोटिक रोग:** मनुष्यों को प्रभावित करने वाले 65% से अधिक संक्रामक रोगों की उत्पत्ति जानवरों में होती है, जो ज़ूनोटिक रोगों को समझने और प्रबंधित करने के महत्व पर जोर देता है।
- **पर्यावरणीय व्यवधान**: पर्यावरणीय स्थितियों और आवासों में परिवर्तन से जानवरों में बीमारियों के फैलने के नए अवसर पैदा हो सकते हैं, जिससे समग्र स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है।
- **अंतर्राष्ट्रीय यात्रा और व्यापार**: अंतर्राष्ट्रीय यात्रा और व्यापार के माध्यम से लोगों, जानवरों और पशु उत्पादों की बढ़ती आवाजाही से सीमाओं के पार बीमारियों के तेजी से फैलने में मदद मिलती है।
- **वन्यजीव वायरस:** वैज्ञानिकों ने वन्यजीवों में घूम रहे 1.7 मिलियन से अधिक वायरस की पहचान की है, जिनमें से कई में ज़ूनोटिक क्षमता है, जो समय पर पता नहीं चलने पर महामारी का खतरा पैदा करते हैं।
- **वैश्विक महामारी जोखिम:** मानव, पशु और पर्यावरणीय स्वास्थ्य का अंतर्संबंध भविष्य में और अधिक महामारियों की संभावना को उजागर करता है, जो एक सक्रिय और सहयोगात्मक वन हेल्थ दृष्टिकोण की आवश्यकता पर बल देता है।

आसियान रक्षा मंत्री बैठक-प्लस (एडीएमएम-प्लस)

संदर्भ: इंडोनेशिया, दक्षिण पूर्व एशियाई देशों के संगठन (आसियान) के रक्षा मंत्रियों की बैठक-प्लस (एडीएमएम-प्लस) के अध्यक्ष के रूप में, वर्ष 2023 में जकार्ता में इस बैठक के 10वें संस्करण की मेजबानी करने के लिए तैयार है।

- **एडीएमएम और एडीएमएम-प्लस अवलोकन:**
  - एडीएमएम आसियान में सर्वोच्च रक्षा सलाहकार और सहकारी तंत्र है।
  - एडीएमएम-प्लस आसियान सदस्य देशों और आठ संवाद भागीदारों के लिए एक सहयोगी मंच के रूप में कार्य करता है, जिन्हें 'प्लस देश' के रूप में जाना जाता है।
- **भारत की भूमिका और साझेदारी:**
  - भारत 1992 में आसियान का संवाद भागीदार बन गया और रक्षा मामलों पर क्षेत्रीय वार्ता में योगदान दिया।
  - पहली एडीएमएम-प्लस बैठक 2010 में हनोई, वियतनाम में आयोजित की गई थी और भारत की सक्रिय भागीदारी को प्रदर्शित करते हुए 2017 से सालाना जारी है।
- **एडीएमएम-प्लस पृष्ठभूमि:**
  - एडीएमएम-प्लस की शुरुआत 2007 में द्वितीय आसियान रक्षा मंत्रियों की बैठक से हुई, जिसमें एडीएमएम-प्लस की स्थापना का प्रस्ताव अपनाया गया था।
  - एडीएमएम-प्लस की पहली बैठक 2010 में हनोई, वियतनाम में बुलाई गई थी, जो क्षेत्रीय रक्षा सहयोग में एक महत्वपूर्ण प्रयास था।
- **उद्देश्य और कार्यक्रम:**
  - इसके प्राथमिक उद्देश्य रक्षा और सुरक्षा सहयोग के माध्यम से क्षेत्रीय शांति और स्थिरता को बढ़ाने के इर्द-गिर्द घूमते हैं।
  - बाली सम्मलेन II और वियनतियाने एक्शन प्रोग्राम; शांति और स्थिरता लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए मार्गदर्शक ढांचे के रूप में कार्य करते हैं।
- **सहयोग के फोकस क्षेत्र:**
  - एडीएमएम-प्लस के सहयोग सात प्रमुख फोकस क्षेत्रों तक विस्तृत है: समुद्री सुरक्षा (एमएस), आतंकवाद-रोधी (सीटी), मानवीय सहायता और आपदा प्रबंधन (एचएडीआर), शांति स्थापना अभियान (पीकेओ), सैन्य चिकित्सा (एमएम), मानवीय खदान कार्रवाई (एचएमए), और साइबर सुरक्षा (सीएस)।
- **विशेषज्ञ कार्य समूह (ईडब्ल्यूजी):**
  - प्रत्येक फोकस क्षेत्र के लिए ईडब्ल्यूजी स्थापित किए गए हैं, जो प्रत्येक तीन वर्ष के चक्र में काम कर रहे हैं।
  - एक आसियान सदस्य राज्य और एक प्लस देश की सह-अध्यक्षता में, ईडब्ल्यूजी अपने संबंधित डोमेन के भीतर सहयोग और पहल की सुविधा प्रदान करते हैं।
- **वर्तमान चक्र (2021-2024):**
  - इस मौजूदा चक्र में, भारत इंडोनेशिया के साथ मानवीय सहायता और आपदा राहत (एचएडीआर) पर ईडब्ल्यूजी की सह-अध्यक्षता करके एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।
- **आसियान सदस्यता:**
  - आसियान की सदस्यता में दस सदस्य देश शामिल हैं: इंडोनेशिया, मलेशिया, फिलीपींस, सिंगापुर, थाईलैंड, ब्रुनेई, वियतनाम, लाओस, म्यांमार और कंबोडिया।
  - अन्य आठ प्लस (ASEAN 8 +) देश में ऑस्ट्रेलिया, चीन, भारत, जापान, न्यूजीलैंड, कोरिया गणराज्य, रूसी संघ और संयुक्त राज्य अमेरिका शामिल हैं।

- **उद्देश्य और सहयोग के क्षेत्र:**
  - इसका व्यापक उद्देश्य संवाद और पारदर्शिता के माध्यम से रक्षा प्रतिष्ठानों के बीच आपसी विश्वास और विश्वास को बढ़ावा देना है।
  - सहयोग के क्षेत्रों में समुद्री सुरक्षा, आतंकवाद-रोधी, मानवीय सहायता और आपदा राहत, शांति अभियान और सैन्य चिकित्सा सहित एक विस्तृत श्रृंखला शामिल है, जो क्षेत्रीय सुरक्षा के लिए एक व्यापक दृष्टिकोण को बढ़ावा देती है।

NEWS IN BETWEEN THE LINES

संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद

हाल ही में, संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद ने गाजा पट्टी में "विस्तारित मानवीय विराम" का आह्वान किया है।

संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद के बारे में:

- संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद की स्थापना 1945 में संयुक्त राष्ट्र चार्टर द्वारा की गई थी।
- यह संयुक्त राष्ट्र के छह प्राथमिक अंगों में से एक है, जो अंतर्राष्ट्रीय शांति और सुरक्षा बनाए रखने पर केंद्रित है।
- इसका मुख्यालय न्यूयॉर्क में है।
- इसमें 15 सदस्य शामिल हैं - पांच स्थायी (संयुक्त राज्य अमेरिका, रूस, फ्रांस, चीन और यूनाइटेड किंगडम) और दस गैर-स्थायी सदस्य जो दो वर्ष के कार्यकाल के लिए चुने गए थे।
- महासभा द्वारा दो वर्ष की अवधि के लिए चुनी गई 10 गैर-स्थायी सीटें भी हैं।
- स्थायी सदस्यों के बीच वीटो प्रणाली से निर्णय लेने में बाधा आती है।
- P5 सदस्यों के बीच गहरे मतभेद अक्सर महत्वपूर्ण निर्णय लेने में गतिरोध और अवरोध पैदा करते हैं।

प्रक्षेपण यान मार्क-3

हाल ही में, इसरो ने घोषणा की कि चंद्रयान -3 को लॉन्च करने के लिए इस्तेमाल किए गए भारत के LVM3 M4 प्रक्षेपण यान का क्रायोजेनिक ऊपरी चरण 15 नवंबर को अनियंत्रित तरीके से पृथ्वी के वायुमंडल में फिर से प्रवेश कर गया।

प्रक्षेपण यान मार्क-3 के बारे में:

- प्रक्षेपण यान मार्क-3 (एलवीएम3) इसरो द्वारा विकसित एक तीन चरणों वाला मध्यम-लिफ्ट प्रक्षेपण यान है।
- इसे जुलाई 2023 में श्रीहरिकोटा, आंध्र प्रदेश से लॉन्च किया गया था, जो भारत का तीसरा चंद्र अन्वेषण मिशन था।
- यह भारत का सबसे भारी रॉकेट है, जिसका वजन 640 टन है, इसकी लंबाई 43.5 मीटर और पेलोड फेयरिंग 5 मीटर है।
- यह 200 किमी की ऊंचाई पर निचली पृथ्वी की कक्षाओं (एलईओ) में 8 टन तक और पृथ्वी से लगभग 35,000 किमी की दूरी पर स्थित जियोस्टेशनरी ट्रांसफर ऑर्बिट्स (जीटीओ) में लगभग 4 टन तक परिवहन कर सकता है।

तीन-चरण प्रक्षेपण प्रणाली:

- LVM-3 के पहले चरण में रॉकेट बॉडी के किनारों से जुड़े दो S200 ठोस रॉकेट बूस्टर शामिल हैं।
- एलवीएम-3 का दूसरा चरण विकास इंजन द्वारा संचालित है, जो तरल प्रणोदक का उपयोग करता है।
- एलवीएम-3 का सबसे ऊपरी चरण एक क्रायोजेनिक चरण है, जिसका अर्थ है कि यह क्रायोजेनिक प्रणोदक का उपयोग करता है जो बेहद कम तापमान पर तरल अवस्था में होते हैं।

अवनगार्ड (Avangard)

हाल ही में, रूस के रॉकेट बलों ने परमाणु-सक्षम "अवनगार्ड" से लैस एक अंतरमहाद्वीपीय बैलिस्टिक मिसाइल को रूस की सेना में शामिल किया है।

अवनगार्ड के बारे में:

- अवनगार्ड एक रूसी हाइपरसोनिक ग्लाइड वाहन (एचजीवी) है जो परमाणु या पारंपरिक पेलोड ले जाने में सक्षम है, जिसे विभिन्न भारी आईसीबीएम के माध्यम से तैनात किया जा सकता है।
- इसका विकास एबीएम संधि के तहत किया गया था, जिसका उद्देश्य रणनीतिक मिसाइल रक्षा प्रणालियों का सामना करना था।
- 2015 और 2016 के बीच, अवनगार्ड ने असाधारण गति और सटीकता का प्रदर्शन करते हुए सफल उड़ान परीक्षण किया।
- 2018 तक, यह बड़े पैमाने पर उत्पादन में परिवर्तित हो गया, दिसंबर 2019 में आधिकारिक तौर पर युद्धक ड्यूटी में प्रवेश किया।
- यह ग्लाइड वाहन एक स्वतंत्र प्रणोदन प्रणाली के बिना संचालित होता है और अपने उड़ान प्रक्षेपवक्र के दौरान जटिल युक्तियों (intricate evasive maneuvers) पर निर्भर करता है।

मिर्गी (Epilepsy)

मिर्गी के बारे में:

- भारत में प्रतिवर्ष 17 नवंबर को राष्ट्रीय मिर्गी दिवस मनाया जाता है।
- यह चौथा सबसे आम न्यूरोलॉजिकल विकार है, जो सभी आयु समूहों के व्यक्तियों को प्रभावित करता है।
- यह आमतौर पर छोटे बच्चों और बड़े वयस्कों में देखा जाता है, महिलाओं की तुलना में पुरुषों में थोड़ा अधिक प्रचलित है।
- सर आइजैक न्यूटन, चार्ल्स डिकेंस, एल्टन जॉन जैसी प्रख्यात हस्तियां मिर्गी से जूझ चुकी हैं।
- **लक्षण:** मिर्गी के लक्षणों में संवेदी परिवर्तन, चक्कर आना, अंगों में संवेदनाएं, घूरना, अनुत्तरदायी और दोहरावदार हरकतें शामिल हैं, संभवतः चेतना के नुकसान के साथ या उसके बिना।
- **उपचार**: हालांकि इसका कोई निश्चित इलाज नहीं है, मिर्गी प्रबंधन में दौरे और उनके प्रभावों को नियंत्रित करने के लिए दवाएं और रणनीतिक तरीके शामिल हैं।
- **डब्ल्यूएचओ रिपोर्ट**: विश्व स्वास्थ्य संगठन की 2019 की रिपोर्ट, "मिर्गी, एक सार्वजनिक स्वास्थ्य अनिवार्यता" ने मिर्गी के वैश्विक बोझ पर प्रकाश डाला और विभिन्न स्तरों पर आवश्यक सार्वजनिक स्वास्थ्य प्रतिक्रियाओं को रेखांकित किया।

समाचार में स्थान

गिनी की खाड़ी

हाल ही में, भारतीय नौसेना ने अटलांटिक महासागर में गिनी की खाड़ी (जीओजी) में अपनी दूसरी समुद्री डकैती रोधी गश्त पूरी की है।

गिनी की खाड़ी के बारे में:

अवस्थिति: गिनी की खाड़ी अफ्रीका के पश्चिमी तट पर स्थित है और उष्णकटिबंधीय अटलांटिक महासागर का उत्तर-पूर्वी भाग है।

निर्देशांक: यह प्रधान मध्याह्न रेखा (0°0'E) और भूमध्य रेखा (0°0'N) पर स्थित है।

तटीय देश: सोलह तटीय देश गिनी की खाड़ी की सीमा पर हैं, जिनमें अंगोला, बेनिन, कैमरून, कोटे डी आइवर, कांगो लोकतांत्रिक गणराज्य, कांगो गणराज्य, गिनी, इक्वेटोरियल गिनी, गिनी-बिसाऊ, गैबॉन, नाइजीरिया, घाना, साओ टोमे प्रिंसिपे, टोगो और सिएरा लियोन शामिल हैं।

लवणता: नदी के प्रवाह और अधिक वर्षा के कारण इस क्षेत्र के पानी में अपेक्षाकृत कम लवणता है।

प्रमुख नदियाँ: वोल्टा और नाइजर नदियाँ गिनी की खाड़ी की प्राथमिक सहायक नदियाँ हैं।

समाचारों में स्थान

ताइवान

हाल ही में चीनी राष्ट्रपति शी जिनपिंग ने अमेरिकी राष्ट्रपति जो बिडेन से इस बात पर जोर दिया कि ताइवान अमेरिका-चीन संबंधों में सबसे महत्वपूर्ण मुद्दा है।

ताइवान (राजधानी: ताइपे)

भौगोलिक अवस्थिति: ताइवान पूर्वी एशिया में स्थित है, जो पूर्व और दक्षिण चीन सागर के जंक्शन पर स्थित है।

राजनीतिक सीमाएँ: यह पीपुल्स रिपब्लिक ऑफ चाइना (पीआरसी), जापान और फिलीपींस के साथ सीमाएँ साझा करता है।

तटीय सीमाएँ: यह जल निकायों से घिरा हुआ है, जिसमें उत्तर में पूर्वी चीन सागर, पूर्व में फिलीपीन सागर, दक्षिण में लुज़ोन जलडमरूमध्य और दक्षिण पश्चिम में दक्षिण चीन सागर शामिल है।

भौतिक विशेषताऐं:

- सबसे ऊंची चोटी, यू शान, 3,952 मीटर ऊंची है, जो ताइवान को दुनिया के सबसे ऊंचे द्वीपों में से एक बनाती है।
- ताइवान की सबसे लंबी नदी चो-शुई (झुओशुई) नदी है, जो 116 मील लंबी है।
- दक्षिण में काओ-पिंग (गाओपिंग) नदी में सबसे बड़ा जल निकासी बेसिन है।

POINTS TO PONDER

- हाल ही में इटली के किस द्वीप में ज्वालामुखी विस्फोट हुआ? - **सिसिली**
- 2011 की जनगणना के आधार पर भारत के किस राज्य में विशेष रूप से कमजोर जनजातीय समूहों (पीवीटीजी) की सबसे बड़ी आबादी है? - **ओडिशा**
- ठोस प्रणोदक बूस्टर मोटर के बंद होने के बाद निर्भय किस प्रकार के इंजन का उपयोग करता है? - **टर्बोजेट इंजन**
- जोसेफ शाइन बनाम भारत संघ मामले में सुप्रीम कोर्ट ने धारा 497 को किस अनुच्छेद का उल्लंघन घोषित किया? - **संविधान के अनुच्छेद 14, 15 और 21**
- हाल ही में डॉक्युमेंटा की फाइंडिंग कमेटी से किसने इस्तीफा दे दिया है? – **रंजीत होसकोटे**